११. शाइस्ता खान की दुर्दशा

शाइस्ता खान का आक्रमण : बीजापुर के आदिलशाह ने बहुत कोशिश की परंतु शिवाजी महाराज के आगे उसकी एक न चली । उसके प्रत्येक सरदार को शिवाजी महाराज ने बुरी तरह से पराजित किया । अंत में आदिलशाह ठंडा पड़ गया । उसने शिवाजी महाराज के साथ संधि कर ली और उनका स्वतंत्र राज्य स्वीकार कर लिया । इस कारण दक्षिणी हिस्सा कुछ समय तक सुरक्षित रहा ।

इसके बाद शिवाजी महाराज उत्तर में मुगलों की ओर मुड़े । मुगलों के आक्रमण से महाराष्ट्र की दुरवस्था हो गई थी । उस समय दिल्ली में मुगल शासक औरंगजेब था । उसके प्रदेश पर शिवाजी महाराज ने आक्रमण किए । इससे बादशाह क्रोध में आ गया । शिवाजी महाराज पर आक्रमण करने के लिए उसने अपने मामा शाइस्ता खान को भेजा । उसने पुणे पर आक्रमण किया । उसके साथ पचहत्तर हजार सैनिक थे । सैकड़ों हाथी, ऊँट और तोपें थीं । शाइस्ता खान शिरवल, शिवापुर और सासवड़ आदि गाँव जीतता हुआ आगे बढ़ा । उसने पुरंदर किले को घेर लिया । वह आगे ही बढ़ा था कि एक बार मराठों ने उसे दर्रे में घेर लिया । मराठा बहुत फुर्तीले और भीमा प्रदेश के घुड़सवार थे । रोटी-चटनी खाना, शरीर पर कंबल ओढ़ना और हवा की तरह पहाड़ों में भाग-दौड़ करने में मराठा बड़े होशियार थे । मराठों की छापामार पद्धति से शाइस्ता खान की सेना परेशान हो गई । अंततः तंग आकर उसने पुरंदर का घेरा उठवा लिया ।

फिरंगोजी नरसाला : अब शाइस्ता खान पुणे की ओर चल पड़ा । पहले उसने चाकण का किला कब्जे में कर लिया । चाकण के किले में फिरंगोजी नरसाला ने बड़े पराक्रम से शाइस्ता खान का सामना किया । दो महीने फिरंगोजी किले की सुरक्षा के लिए लड़ता रहा परंतु शाइस्ता खान की तोपों के सामने वह टिक न सका । फिरंगोजी नरसाला की वीरता पर शाइस्ता खान प्रसन्न हुआ । उसने उसे शाही नौकरी का लोभ दिखाया लेकिन फिरंगोजी लोभ में नहीं आया ।

लाल महल में शाइस्ता खान : अब शाइस्ता खान पुणे आया । वह शिवाजी महाराज के लाल महल में रुका । उसकी सेना ने लाल महल के चारों ओर पड़ाव डाला । एक वर्ष बीता, दूसरा बीता परंतु शाइस्ता खान लाल महल से टल नहीं रहा था; उल्टे वह अपनी सेना आस-पास के प्रदेश में भेजा करता । उसके सैनिक लोगों के जानवर पकड़ लाते; खेती का नुकसान करते । इस प्रकार उसने आस-पास के प्रदेश को तहस-नहस कर दिया था ।

साहसपूर्ण योजना : शिवाजी महाराज ने शाइस्ता खान को सबक सिखाने का निश्चय किया । शाइस्ता खान लाल महल पर अधिकार जमाए बैठा था; यह बात शिवाजी महाराज की दृष्टि से सुविधाजनक थी क्योंकि शिवाजी महाराज को उस महल के कमरे, कक्ष, खिड़कियाँ, दरवाजे, रास्ते और गुप्त मार्ग आदि की भली-भाँति जानकारी थी । इसके अतिरिक्त शिवाजी महाराज के चतुर गुप्तचर खान की सेना में पहुँच

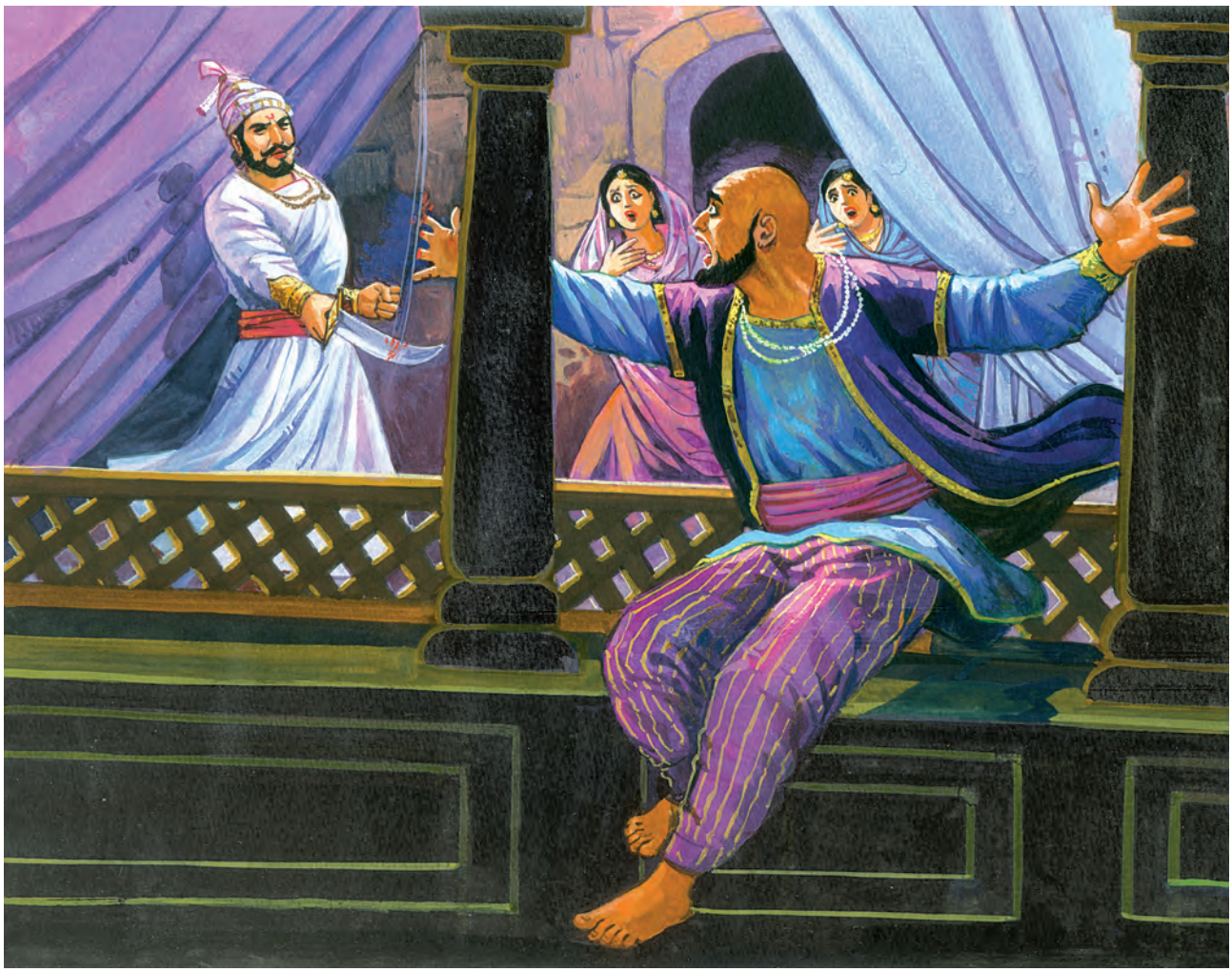

शिवाजी महाराज का शाइस्ता खान पर हमला

चुके थे । रात के समय सीधे शाइस्ता खान के महल में घुसकर उसे खत्म करने की शिवाजी महाराज ने योजना बनाई । कितना साहसपूर्ण निश्चय था वह ! महल में चींटी-कीड़ों तक को प्रवेश कठिन था । लाल महल के चारों ओर पचहत्तर हजार सैनिकों का कड़ा पहरा था । शाइस्ता खान ने सशस्त्र मराठों को शहर में आने के लिए मना कर रखा था परंतु जब शिवाजी महाराज निश्चय करते तो वह अटल हुआ करता था ।

शिवाजी महाराज ने दिन निश्चित किया । ५ अप्रैल १६६३ की रात । गाते-बजाते शादी की बारात जा रही थी । आगे चंद्रज्योतियाँ (दीये) जल रही थीं । सैकड़ों स्त्री-पुरुष सज-धजकर चल रहे थे । कोई पालकी में, कोई डोली में तो कोई पैदल चल रहा था । अपने आदमी लेकर शिवाजी महाराज उस बारात में घुस गए थे । बारात आगे निकल गई । सर्वत्र सन्नाटा छाया हुआ था । शिवाजी महाराज और उनके आदमी लाल महल की दीवार की ओर बढ़े । उस समय शाइस्ता खान गहरी नींद में था ।

शाइस्ता खान को सबक सिखाया : महल की दीवार में बड़ी सेंध बनाकर शिवाजी महाराज अंदर घुस गए । उनका अपना महल था वह ! वे उसका कोना-कोना जानते थे । खान के पहरेदार

ऊँघ रहे थे । शिवाजी महाराज के आदमियों ने उन्हें बाँध दिया । शिवाजी महाराज और अंदर घुस गए । इतने में तलवार लिये कोई उनकी ओर दौड़ता हुआ आया । शिवाजी महाराज ने उसे मार गिराया । उन्हें लगा कि वह शाइस्ता खान होगा लेकिन वह उसका बेटा था । शोर मच गया । लोग जाग गए ।

शिवाजी महाराज सीधे खान के कमरे में पहुँचे । उन्होंने तलवार निकाली । शाइस्ता खान डर गया । ''शैतान ! शैतान !'' चिल्लाता हुआ वह खिड़की से भागने की कोशिश करने लगा । शिवाजी महाराज उसके पीछे दौड़े । शाइस्ता खान खिड़की से बाहर कूदने ही वाला था कि शिवाजी महाराज ने उसपर वार किया । खान की तीन उँगलियाँ कट गईं । जो प्राणों पर गुजरनेवाली थी वह उँगलियों पर निभ गई । खान खिड़की से कूदकर भाग निकला । उसे धोखे में रखने के लिए शिवाजी महाराज और उनके आदमी ''शिवाजी आया । दौड़ो, दौड़ो ! पकड़ो उसे !'' चिल्लाते हुए भागने लगे । खान के आदमी भी डरकर भाग रहे थे । शिवाजी महाराज और उनके आदमी सिंहगढ़ की ओर चले गए । खान के आदमी रातभर शिवाजी महाराज को ढूँढ़ते रहे ।

शाइस्ता खान बुरी तरह डर गया था । उसे भय सताने लगा, 'आज उँगलियाँ कट गईं, कल शिवाजी मेरा सिर काटकर ले जाएगा ।' यह समाचार मिलते ही बादशाह औरंगजेब बहुत क्रोधित हुआ । वह शाइस्ता खान पर बहुत नाराज हुआ । उसने शाइस्ता खान को बंगाल जाने का आदेश दिया ।

मुगल शासन के लिए यह पहली जबरदस्त चोट थी । शिवाजी महाराज विजयी हुए । तोपें दागी गईं । सारे महाराष्ट्र में आनंद छा गया ।

स्वाध्याय

१. कोष्ठक में से उचित विकल्प चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति करो :

(अ) शाइस्ता खान ने ..... किले को घेर लिया ।
(पुरंदर, पन्हाला, शिवनेरी)

(आ) शाइस्ता खान पुणे के ..... में रुका ।
(शनिवार वाड़ा, लाल महल, पर्वती)

(इ) बादशाह औरंगजेब ने शाइस्ता खान को ..... में जाने का आदेश दिया ।
(असम, कनार्टक, बंगाल)

२. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर एक-एक वाक्य में लिखो:

(अ) शाइस्ता खान किन गाँवों को जीतता हुआ पुणे आया ?

(आ) शाइस्ता खान की सेना परेशान क्यों हो गई थी ?

(इ) शाइस्ता खान को कौन-सा भय सताने लगा ?

३. कारण लिखो :

(अ) बादशाह औरंगजेब शिवाजी महाराज पर क्रोधित हुआ ।

(आ) शाइस्ता खान खिड़की से भाग गया ।

४. घटनाओं को कालक्रमानुसार लिखो :

(अ) शिवाजी महाराज और उनके सहयोगी सिंहगढ़ चले गए ।

(आ) शाइस्ता खान लाल महल में रुका ।

(इ) शाइस्ता खान ने चाकण का किला अपने अधिकार में कर लिया ।

(ई) शिवाजी महाराज ने शाइस्ता खान को सबक सिखाया ।

उपक्रम

लाल महल की सैर का आयोजन करो ।